ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2
जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।
Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 40, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 फरवरी, 2017 से रविवार 12 फरवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुग्राम हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा मेला सम्पन्न : आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की भागीदारी

वैदिक चिन्तन स्वीकारने से होगी आतंकवाद से मुक्ति

भारतीय चिन्तन को यदि विश्व में सभी मानने लग जाएं तो दुनिया में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं रहेगी – आचार्य देवव्रत, राज्यपाल हिमाचल प्रदेश

भारतीय संस्कृति के विस्तार के लिए ऐसे मेले बहुत उपयोगी – सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे.बी.एम.ग्रुप

अतीत का एक हल्का सा झरोखा, एक क्षण को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हम अपने देश के किसी गाँव में हों। अपनी सांस्कृतिक पोशाकें पहन कर घूमते बच्चे, किसी महिला के हाथ में हाथ की आटा चक्की तो कोई पुरुष हाथ की चारा काटने की मशीन पर खड़ा दिखाई दे रहा था, – शेष पृष्ठ 8 पर

गुरुग्राम में सम्पन्न हिन्दू आध्यात्मिक सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल एवं विचार टीवी नेटवर्क के स्टालों का उद्घाटन। महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश आचार्य देवव्रत जी फीता काटते हुए साथ में हैं श्रीमती विभा आर्या, हरियाणा सभा के उप प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य, एवं श्री हर्ष प्रिय आर्य जी। विचार टीवी नेटवर्क के स्टाल पर दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते श्री सुरेन्द्र आर्य जी साथ में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मन्त्री श्री एस.पी. सिंह जी एवं अन्य आर्यजन।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
193वाँ
जन्मोत्सव

फल्गुन कृष्ण 10 तद्नुसार मंगलवार 21 फरवरी, 2017
नगर वन पार्क, पालम रोड, सागरपुर, नई दिल्ली-110046
भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन
यज्ञ : सायं 3:15 बजे भजन संध्या : सायं 4:15 बजे प्रीतिभोज : सायं 7 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।
निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज सागरपुर एवं प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित
विशाल ऋषि मेला
फल्गुन कृष्ण 13 तद्नुसार शुक्रवार 24 फरवरी, 2017 (शिवरात्रि)
स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-2
यज्ञ : प्रातः 8 बजे कार्यक्रम : प्रातः 10 बजे सार्वजनिक सभा : दोपहर 1:30 बजे
विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करें
निवेदक
महाशय धर्मपाल (प्रधान), सुरेन्द्र कुमार रैली (व. उप प्रधान), सतीश चड्ढा (महामन्त्री), अरुण प्रकाश वर्मा (कोषाध्यक्ष)
आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में
महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया का उद्घाटन एवं
वैदिक जनजातीय महासम्मेलन : 17 फरवरी, 2017 शुक्रवार
उद्घाटन : महाशय धर्मपाल जी उद्घाटन : प्रातः 11 बजे अध्यक्षता : श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा
आर्यजन अधिकाधिक संख्या मे भाग लेकर समारोह को सफल बनाएं
सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी मुम्बई राजधानी से टिकटें स्वयं आरक्षित करवा लें अभी टिकटें उपलब्ध हैं। 15 फरवरी को मुम्बई राजधानी से रतलाम (म.प्र.) के लिए प्रस्थान करें। 16 की प्रातःकाल रतलाम से बामनिया तथा 17 की रात्रि बामनिया से रतलाम रेलवे स्टेशन तक ले जाने के लिए गाड़ियां उपलब्ध रहेगी। 16 फरवरी को क्षेत्रीय आश्रमों/बालवाड़ियों का भ्रमण कार्यक्रम रहेगा। अधिक जानकारी के लिए 96300 00142 से सम्पर्क करें।
प्रकाश आर्य (मन्त्री), विनय आर्य (उपमन्त्री) – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
संगीता सोनी (अध्यक्ष), आचार्य दया सागर (संयोजक), विमल मुथा (सहसंयोजक) – वैदिक जनजातीय महासम्मेलन आयोजन समिति
आचार्य जीववर्धन (संयोजक) – राजस्थान
इन्द्र प्रकाश गांधी (प्रधान) – म.भा.आर्य प्रतिनिधि सभा
जोगेन्द्र खट्टर (महामन्त्री) – अ.भा.दयानन्द सेवाश्रम संघ

वेद-स्वाध्याय

हे जगदीश्वर! पाप लक्ष्मी को परे धकेलो

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धाः हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः।। -अथर्व. 7/115/2
ऋषिः **अथर्वाङ्गिराः।।** देवता- **सविता।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **अजुष्टा**=असेविता, काम में न आनेवाली, अतएव **पतयालुः**= दुराचार में गिरने-वाली, मुझे गिरानेवाली **या** = जो **लक्ष्मीः** = लक्ष्मी **मा** = मुझे **अभिचस्कन्द** = चिमटी हुई है **वृक्षं वन्दना इव** = जैसेकि सुखा देनेवाली वन्दना बेल वृक्ष को चिमट जाती है **ताम्** = उस ऐसी लक्ष्मी को **सवितः** = हे प्रेरक परमेश्वर! **अस्मत् इतः अन्यत्र** = तू हमसे, यहां से पृथक् **धाः** = रख दे-कर दे **हिरण्यहस्तः** = हिरण्यहस्त से-तेजस्वी चमकते हाथ से-तू **नः** = हमें **वसु रराणः** = निरन्तर ऐश्वर्य प्रदान कर।

विनय-हे जगदीश्वर! मेरे पास ऐसी लक्ष्मी पड़ी हुई है जो 'अजुष्टा' है, जो सेवित नहीं होती, जो किसी की प्रीतिमय सेवा में नहीं आती, वह किस काम की है? वह लक्ष्मी 'लक्ष्मी' नहीं है। वह लक्ष्मी दुराचार बढ़ाने का कारण होती है। 'अजुष्टा' लक्ष्मी पतन का भारी प्रलोभन होती है। ऐसा धन बुरे कार्यों में ही बरबाद हुआ करता है और मनुष्य को नीचे गिरा देता है। ऐसी लक्ष्मी को मैं मोह के मारे त्यागता (परहित में देता) भी नहीं हूँ और उस सबका स्वयं उपयोग भी नहीं कर सकता हूँ। इसलिए वह या तो बुरे काम में पतित हो जाती है या यूँ ही सड़कर नष्ट हो जाती है, परन्तु सबसे बुरी बात तो यह है कि यह मेरी ऐसी 'लक्ष्मी' मुझे चिमटी हुई हर प्रकार से मुझे ही बरबाद करती है, मेरे जीवन-रस को चूसती है, अतः हे मेरे प्रेरक प्रभो! मुझमें ऐसी हिम्मत दो कि मैं उस लक्ष्मी को-इससे पहले कि वह पतित होने लगे और मुझे विनष्ट करने लगे-कहीं अन्यत्र धारित कर दूँ-किसी अच्छे कार्य में लगा दूँ, उसे अपने पर लादे न रक्खूँ। हे सवितः! तुम ही उस दुर्लक्ष्मी को यहाँ से तो हटा दो। यह 'लक्ष्मी' नहीं है, किन्तु वह मेरे लिए विनाशक शापरूप है। वह मुझपर मोह द्वारा चिमटी हुई केवल मेरे जीवन-रस को सुखा रही है। जैसे वन्दना बेल जिस वृक्ष पर लगती है उस वृक्ष को बिल्कुल सुखा देती है, वैसे ही यह अजुष्टा लक्ष्मी मुझे घेरे हुए है, मेरा विनाश कर डालने के लिए मुझे आच्छादित किये हुए है। हे प्रभो! तुम मुझसे इसे छुड़ाओ। मेरे मोह को भङ्ग करके इसे यहाँ से हटाने का मुझे सामर्थ्य दो, नहीं तो यह 'अजुष्टा' लक्ष्मी मुझे चूसकर समाप्त कर रही है-मेरी उन्नति को रोक रही है, मेरे आत्म-तेज को हरती जा रही है।

हे प्रेरक! मेरी प्रार्थना है कि आगे से ऐसा धन तो मेरे पास आने ही न पाये। मुझे तुम बेशक थोड़ा-सा धन देना, परन्तु वह धन चमकता हुआ, तेजस्वी, निष्कलंक हो, हिरण्य हो, हितरमण हो। वह धन सर्वांश में उपयोगी हो, उसका एक-एक अंश मेरे तेज, मेरे आत्मवीर्य को बढ़ानेवाला हो। तुम्हारे 'हिरण्यहस्त' से ही अब मैं ध ान चाहता हूं। तेरे चमकते हुए 'हिरण्यहस्त' से अब मुझे सदा ऐसा तेजस्वी धन मिलता रहे जिसका कि एक-एक कण मेरे आत्मतेज को बढ़ाने में व्यय हो तथा वह अन्यत्र भी जहाँ जाए वहाँ मनुष्यों के तेज के बढ़ाने में ही उपयुक्त हो।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बंटवारे के नए बीज

वैसे देखा जाये तो भारतीय राजनीतिक महत्वकांक्षा देश के अन्दर छोटे बड़े हजारों मुद्दों को जन्म देने का कार्य कर रही है। जिस कारण कुछ लोग तो भारत को विवादों का देश भी कहने से गुरेज नहीं करते हैं। अभी पिछले दिनों ही अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सबसे बड़े सभागार केनेडी हॉल में संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण देने की बात को नकारते हुए संविधान की इसी धारा 341 को खत्म करने की मांग करने के लिए यह सेमिनार बुलाया गया था। सेमिनार के महत्त्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस सेमिनार में हिस्सा लेने आए सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील महमूद पार्चा ने दावा किया कि आरक्षण धर्म के आधार पर भी दिया जा सकता है।

देखा जाये तो आरक्षण देश के अन्दर एक ऐसा अमृत का प्याला बन चुका है जिसे जाति और धर्म के नाम पर हर कोई पीना चाहता है। गुजरात में गुज्जर समुदाय तो हरियाणा में जाट समुदाय तो इसके लिए सत्ता से टकराव लेने से भी नहीं हिचकते दिख रहे हैं। यह जातिगत आरक्षण का प्याला है लेकिन मुस्लिम समुदाय इससे एक कदम आगे बढ़कर धार्मिक आधार पर आरक्षण की मांग लेकर खड़े होने लगे हैं। भारतीय युवाओं को यह याद दिलाने की जरुरत है कि 1947 में धर्म के आधार पर देश के बंटवारे की नींव भी इसी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में रखी गई थी। गौर करने वाली बात यह है 70 साल बाद एक बार फिर भारत को बांटने की बात यहां से हो रही है।

मुस्लिम आरक्षण की इस मांग पर जाने-माने विचारक तुफैल अहमद लिखते हैं कि भारतीय सेना से रिटायर्ड ब्रिगेडियर सैयद अहमद अली ने 2012 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति का काम संभाला था। सेना में 35 साल काम करने के बाद भी ब्रिगेडियर साहब उसकी धर्मनिरपेक्षता को आत्मसात नहीं कर पाए। केवल नाम से ही सही लेकिन सैयद अहमद अली का वास्ता पैंगबर मोहम्मद के वंश से है। मुसलमानों में सैयद ऊंची जाति मानी जाति है और इनका निकाह निचली जातियों में अमूमन नहीं होता। एएमयू की वेबसाइट भी ब्रिगेडियर अली को जाने-माने जमींदारों के परिवार से बताती है। मुसलमानों के पिछड़ेपन में इन जमींदारों का भी उतना ही हाथ है जितना उलेमाओं का है।

तुफैल कहते हैं कि अब ब्रिगेडियर अली ने भारतीय मुसलमानों को आरक्षण देने की मांग उठाई है। ब्रिगेडियर साहब शायद बंटवारे के दौरान हुए खून-खराबे को भूल गए। जिन हालातों में संविधान निर्माताओं ने धर्मनिरपेक्ष संविधान बनाया था। सेमिनार में मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर अली ने कहा,'मुसलमानों का पिछड़ापन दूर करने के लिए शिक्षा में आरक्षण जरूरी है।' होना तो यह चाहिए था कि भारत पर 1000 साल के मुस्लिम शासन के दौरान शिक्षा और विज्ञान के दम पर वह देश को चार-चांद लगा देते। लेकिन मुस्लिम शहंशाहों को मस्जिद, महल और मकबरे बनवाने से फुर्सत मिलती तब तो वे रेलवे, बस और टेलीफोन विकसित करने के बारे में सोचते। नई खोज और आविष्कार की बात करने के बजाए जब एक विश्वविद्यालय का कुलपति आरक्षण की बात करे, तो अफसोस होना लाजमी है। उस पर से सैयद अहमद अली सेना में ब्रिगेडियर भी रह चुके हैं। ब्रिगेडियर साहब सेना से इतना नहीं सीख पाए कि तवज्जो काबिलियत को मिलनी चाहिए।

मुस्लिम समाज को आगे बढ़ाना हो तो उसे वैज्ञानिक नजरिया अपनाना होगा, उदार सोच रखनी होगी, तभी असलियत के मसले और उनसे जुड़े सही सवाल उठा पाएगा। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बनाने के पीछे भी सर सैयद अहमद खां की खास सोच थी। उन्होंने मुस्लिम समुदाय में वैज्ञानिक और तार्किक सोच पैदा करने के लिए इसकी नींव रखी थी। उनकी उर्दू पत्रिका तहजीबुल अखलाक भी मुस्लिम छात्रों में नई सोच पैदा करना चाहती थी। लेकिन लगता है एएमयू के कुलपति ने इसके संस्थापक सर सैयद अहमद खां से इतना भी नहीं सीखा। अली ने धर्म के आध ार पर आरक्षण की वकालत की। धर्म के आधार पर इस तरह की वकालत का नतीजा एक और बंटवारा ही होगा। दुख की बात यह है कि एक बार फिर एएमयू इसका गवाह बन रहा है। हाल के दिनों में भारत में इस्लाम के पैरोकारों ने अपना मकसद पूरा करने के लिए दलितों से दोस्ती गांठी है। जिसका मुख्य कारण भारत में 25 फीसदी दलितों की आबादी है। महमूद पार्चा ने संविधान की धारा 341 को दलितों और मुसलमानों की इस दोस्ती की गांठ बता दिया। सेमिनार में पार्चा ने कहा कि धारा 341 पर बहस न होना दलितों और मुसलमानों के अधिकारों का हनन है। इसे तुरन्त हटाया जाना चाहिए। साल 2017 में सर सैयद अहमद खां की 200वीं जन्मशती है। इस मौके पर एक बार देखना चाहिए क्या एएमयू एक बार फिर भारत के बंटवारे के आंदोलन की अगुवाई तो नहीं कर रहा? - ***सम्पादक***

बोध कथा

प्रभु भजन में तन्मयता

अकबर बादशाह दिनभर यात्रा करते हुए बाहर दूर निकल गये। चलते-चलते नमाज़ का समय हो गया। तब मार्ग में ही एक ओर नमाज़ का वस्त्र बिछाकर दो-ज़ानु हो गए। उधर एक नवयुवती अपने पतिदेव को खोजती आ रही थी। उसके पतिदेव प्रातः के गए घर नहीं लौटे थे। यह सच्ची देवी पति-वियोग में उन्मत्त इधर-उधर दृष्टि डालती जा रही थी-अपने विचार में निमग्न। उसने नमाज़ का कपड़ा देखा नहीं और उसी के ऊपर पग रखती आगे बढ़ती गई। अकबर को उसकी गुस्ताख़ी पर क्रोध तो आया, परन्तु चुप साधे रखी। थोड़ी ही देर में जब वह युवती अपने पतिदेव के साथ लौटी तो अकबर कहने लगा-''तुझे दिखा नहीं मैं नमाज़ में, प्रभु-भक्ति में था? तुझे जाए-नमाज़ भी नज़र नहीं पड़ा? पग रखती चली गई?''

युवती ने बड़े धैर्य से एक दोहा पढ़ा-

नर-राची सूझी नहीं,
तुम कस लख्यो सुजान?
कुरान पढ़त बौरे भये,
नहिं राच्यो रहमान।।

''मैं तो अपने पतिदेव की खोज में गुम हो चुकी थी, जिससे मुझे कुछ सूझा नहीं, परन्तु तुम तो प्रभु-भजन में लीन थे, तुमने मुझे कैसे देख लिया? मालूम होता है कि कुरान ही पढ़-पढ़ बौरा गए हो, भगवान् में अभी प्रीति नहीं हुई।''

अकबर यह उत्तर सुनकर अवाक् रह गया और बतलाया जाता है कि वह अक्सर लम्बा श्वास लेकर यही दोहा बार-बार दोहराया करता था।

- साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

संत रविदास और इस्लाम

- डॉ. विवेक आर्य

आज जय भीम, जय भीम का नारा लगाने वाले दलित भाइयों को आज के कुछ राजनेता कठपुतली के समान प्रयोग कर रहे हैं। यह मानसिक गुलामी का लक्षण है। दलित-मुस्लिम गठजोड़ के रूप में बहकाना भी इसी कड़ी का भाग है। दलित समाज में संत रविदास का नाम प्रमुख समाज सुधारकों के रूप में स्मरण किया जाता है। आप जाटव या चमार कुल से सम्बंधित माने जाते थे। चमार शब्द चंवर का अपभ्रंश है।

चर्ममारी राजवंश का उल्लेख महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय वांग्मय में मिलता है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विजय सोनकर शास्त्री ने इस विषय पर गहन शोध कर चर्ममारी राजवंश के इतिहास पर पुस्तक लिखी है। इसी तरह चमार शब्द से मिलते-जुलते शब्द चंवर वंश के क्षत्रियों के बारे में कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है। चंवर राजवंश का शासन पश्चिमी भारत पर रहा है। इसकी शाखाएं मेवाड़ के प्रतापी सम्राट महाराज बाप्पा रावल के वंश से मिलती हैं। संत रविदास जी लम्बे समय तक चित्तौड़ के दुर्ग में महाराणा सांगा के गुरू के रूप में रहे हैं। संत रविदास जी के महान, प्रभावी व्यक्तित्व के कारण बड़ी संख्या में लोग इनके शिष्य बने। आज भी इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में रविदासी पाये जाते हैं।

उस काल का मुस्लिम सुल्तान सिकंदर लोधी अन्य किसी भी सामान्य मुस्लिम शासक की तरह भारत के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की उधेड़बुन में लगा रहता था। इन सभी आक्रमणकारियों की दृष्टि गाजी उपाधि पर रहती थी। सुल्तान सिकंदर लोधी ने संत रविदास जी महाराज को मुसलमान बनाने की जुगत में अपने मुल्लाओं को लगाया। जनश्रुति है कि वो मुल्ला संत रविदास जी महाराज से प्रभावित होकर स्वयं उनके शिष्य बन गए और एक तो रामदास नाम रख कर हिन्दू हो गया। सिकंदर लोदी अपने षड्यंत्र की यह दुर्गति होने पर चिढ़ गया और उसने संत रविदास जी को बंदी बना लिया और उनके अनुयायियों को हिन्दुओं में सदैव से निषिद्ध खाल उतारने, चमड़ा कमाने, जूते बनाने के काम में लगाया। इसी दुष्ट ने चंवर वंश के क्षत्रियों को अपमानित करने के लिये नाम बिगाड़ कर चमार सम्बोधित किया। चमार शब्द का पहला प्रयोग यहीं से शुरू हुआ। संत रविदास जी महाराज की ये पंक्तियाँ सिकंदर लोधी के अत्याचार का वर्णन करती हैं :-

वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान,
फिर मैं क्यों छोडूँ इसे पढ़ लूँ झूट कुरान।
वेद धर्म छोडूँ नहीं कोसिस करो हजार,
तिल-तिल काटो चाही गोदो अंग कटार।

चंवर वंश के क्षत्रिय संत रविदास जी के बंदी बनाए जाने का समाचार मिलने पर दिल्ली पर चढ़ दौड़े और दिल्ली की नाकाबंदी कर ली। विवश होकर सुल्तान सिकंदर लोदी को संत रविदास जी को छोड़ना पड़ा । इस झपट का जिक्र इतिहास की पुस्तकों में नहीं है मगर संत रविदास जी के ग्रन्थ रविदास रामायण की यह पंक्तियाँ सत्य उद्घाटित करती हैं :-

बादशाह ने वचन उचारा ।
मत प्यादरा इसलाम हमारा ।।
खंडन करै उसे रविदासा ।
उसे करौ प्राण कौ नाशा ।।
जब तक राम नाम रट लावे ।
दाना पानी यह नहीं पावे ।।
जब इसलाम धर्म स्वीरकारे ।
मुख से कलमा आप उचारै ।।
पढ़े नमाज जभी चितलाई ।
दाना पानी तब यह पाई ।।

.....प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विजय सोनकर शास्त्री ने इस विषय पर गहन शोध कर चर्ममारी राजवंश के इतिहास पर पुस्तक लिखी है। इसी तरह चमार शब्द से मिलते-जुलते शब्द चंवर वंश के क्षत्रियों के बारे में कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है। चंवर राजवंश का शासन पश्चिमी भारत पर रहा है। इसकी शाखाएं मेवाड़ के प्रतापी सम्राट महाराज बाप्पा रावल के वंश से मिलती हैं। संत रविदास जी लम्बे समय तक चित्तौड़ के दुर्ग में महाराणा सांगा के गुरु के रूप में रहे हैं। संत रविदास जी के महान, प्रभावी व्यक्तित्व के कारण बड़ी संख्या में लोग इनके शिष्य बने।.....

जैसे उस काल में इस्लामिक शासक हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते रहते थे वैसे ही आज भी कर रहे हैं। उस काल में दलितों के प्रेरणास्रोत्र संत रविदास सरीखे महान चिंतक थे। जिन्हें अपने प्रान न्योछावर करना स्वीकार था मगर वेदों को त्याग कर कुरान पढ़ना स्वीकार नहीं था।

मगर इसे ठीक विपरीत आज के दलित राजनेता अपने तुच्छ लाभ के लिए अपने पूर्वजों की संस्कृति और तपस्या की अनदेखी कर रहे हैं।

दलित समाज के कुछ राजनेता जिनका काम ही समाज के छोटे-छोटे खंड बाँट कर अपनी दुकान चलाना है अपने हित के लिए हिन्दू समाज के टुकड़े-टुकड़े करने का प्रयास कर रहे हैं।

आइये डॉ. अम्बेडकर की सुने जिन्होंने अनेक प्रलोभन के बाद भी इस्लाम और ईसाइयत को स्वीकार करना स्वीकार नहीं किया।

संत रविदास और श्री राम

अपनी राजनीतिक हितों को साधने के लिए दलित राजनेता और विचारक श्री राम जी के विषय में असभ्य भाषण तक करने से पीछे नहीं हट रहे हैं। कोई उन्हें मिथक बताता है, कोई विदेशी आर्य बताता है, कोई शम्बूक शूद्र का हत्यारा बताता है। सत्य यह है कि यह सब भ्रामक एवं असत्य प्रचार है जिसका उद्देश्य अपरिपक्व दलितों को भड़काकर अपना राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करना है। मगर इस कवायद में सत्य इतिहास को भी दलितों ने झुठला दिया है। अगर श्री रामचंद्र जी मिथक अथवा विदेशी अथवा दलितों पर अत्याचार करने वाले होते तो चमार (चर्मकार) जाति में पैदा हुए संत रविदास श्री राम जी के सम्मान में भक्ति न करते। प्रमाण देखिये :-

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि
हरि सिमरत जन गए निस्तरि तरे।१।
हरि के नाम कबीर उजागर ।।
जनम-जनम के काटे कागर ।।1।।
निमत नामदेउ दूधु पिआइआ।।
तउ जग जनम संकट नहीं आइआ ।।2।।
जन रविदास राम रंगि राता ।।
इउ गुर परसादी नरक नहीं जाता ।।3।।

- आसा बाणी स्त्री रविदास जिउ की, पृष्ठ 487

सन्देश- इस चौपाई में संत रविदास जी कह रहे हैं कि जो राम के रंग में (भक्ति में) रंग जायेगा वह कभी नरक नहीं जायेगा।

2. जल की भीति पवन का थंभा
रकत बुंद का गारा।
हाड मारा नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ।।१।।
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा।।
जेसे तरवर पंखि बसेरा ।।१।।
राखउ कंध उसारहु नीवां ।।
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ।।२।।
बंके वाल पाग सिरि डेरी ।।
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ।।३।।
ऊंचे मंदर सुंदर नारी ।।
राम नाम बिनु बाजी हारी ।।४।।
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ।।
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ।।५।।

- सोरठी बाणी रविदास जी की, पृष्ठ 659

सन्देश- रविदास जी कह रहे हैं कि राम नाम बिना सब व्यर्थ है।

मध्य काल के दलित संत हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत एवं धर्म के नाम पर अन्धविश्वास का कड़ा विरोध करते थे मगर श्री राम और श्री कृष्ण को पूरा मान देते थे। उनका प्रयोजन समाज सुधार था। आज के कुछ अम्बेडकरवादी दलित साहित्य के नाम पर ऐसा कूड़ा परोस रहे हैं जिसका उद्देश्य केवल हिन्दू समाज की सभी मान्यताओं जैसे वेद, गौ माता, तीर्थ, श्री राम, श्री कृष्ण आदि को गाली देना भर होता है। इस सुनियोजित षडयंत्र का उद्देश्य समाज सुधार नहीं अपितु परस्पर वैमनस्य फैला कर आपसी मतभेद को बढ़ावा देना है। हम सभी देशवासियों का जिन्होंने भारत की पवित्र मिट्टी में जन्म लिया है, यह कर्त्तव्य बनता है कि इस जातिवाद रूपी बीमारी को जड़ से मिटाकर इस हिन्दू समाज की एकता को तोड़ने का सुनियोजित षडयंत्र विफल कर दे।

(हर हिन्दू राष्ट्रवादी इस लेख को शेयर अवश्य करें जिससे हिन्दू समाज को तोड़ने वालों का षडयंत्र विफल हो जाये)।

प्रेरक प्रसंग

मुझे चारपाई पर ले चलिए

ऋषिवर के पुराने सुशिष्यों ने वैदिक धर्म के प्रचार व देश धर्म की रक्षा के लिए जो तप-त्याग किया है-वह ईसा व बुद्ध महात्मा के शिष्यों की साधना से कम नहीं है। पण्डित विष्णुदत्तजी एडवोकेट पंजाब के एक प्रमुख नेता व कुशल लेखक थे। उन्होंने लिखा है कि कहीं एक बहुत बड़ा तालुकेदार अपनी बिरादरी सहित ईसाई बनने लगा। आर्यों को इसकी सूचना दी गई। आर्य भाई भागे-भागे अपने एक पूज्य विद्वान् शास्त्रार्थी के पास पहुँचे और सब वृत्तान्त सुनाया। वृत्तान्त तो सुना दिया, परन्तु उस विद्वान् के पास जाना निष्फल दीख रहा था। कारण? वह बहुत रुग्णावस्था में चारपाई पर पड़े थे।

उस आर्यविद्वान् ने कहा, ''मुझे चारपाई पर ही किसी प्रकार से वहाँ पहुँचा दो। अपनी तड़प से सबको तड़पा देनेवाले आर्यवीर अपने महान् सेनानी की चारपाई उस स्थान पर ले-गये।

पादरियों को निमन्त्रण दिया गया कि आकर सत्य-असत्य का निर्णय कर लें। पादरी आ गया। चारपाई पर लेटे-लेटे उस आर्य महारथी ने शास्त्रार्थ किया। इसका परिणाम वही हुआ जिसकी आशा थी। एक भी व्यक्ति ईसाई न बना।

आर्यपुरुषो! क्या आप जानते हैं कि यह चारपाई पर लेटे-लेटे शास्त्रार्थ करनेवाला सेनानी कौन था?

यह था धर्म-धुन का हिमालय वीतराग स्वामी दर्शनानन्द!

यह घटना उत्तरप्रदेश की ही लगती है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल में तो तालुकेदार शब्द प्रचलित ही नहीं है। न जाने स्वामीजी के जीवन में ऐसी कितनी घटनाएँ घटीं। उन्होंने पग-पग पर अपनी श्रद्धा के अद्भुत चमत्कार दिखलाये।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

महर्षि दयानन्द जी धार्मिक व सामाजिक क्रांति के पुरोधा

19वीं सदी जब सारा भारत अंग्रेजों की दासता को अपना भाग्य समझकर सोया था। देशवासी अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की बजाय उल्टा उनका श्रृंगार कर रहे थे। राजनैतिक और मानसिक दासता इस तरह लोगों के दिमाग में घर कर गयी थी कि आजादी की बात करना भी लोगों को एक स्वप्न सा लगने लगा था। देश और समाज को सती प्रथा, जाति प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मूर्तिपूजा, छुआछूत एवं बहुदेववाद आदि बुराइयों ने दूषित कर रखा था, विभिन्न आडम्बरों के कारण धर्म संकीर्ण होता जा रहा था। ईसाइयत और इस्लाम अपने चरम पर था। हालाँकि भारत से मुगल शासन राजनैतिक स्तर पर खत्म हो गया था पर सामाजिक स्तर पर पूरी तरह हावी था। लोग वैदिक हिन्दू धर्म के प्रति उदासीन होते जा रहे थे। अपनी संस्कृति के प्रति कोई रुचि लोगों के अन्दर न रही थी। देश पर अंग्रेज तो धर्म पर पाखंड हावी था और सर्व समाज विसंगतियों के जाल में कैद था।

लेकिन उसी दौरान गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर एक बालक का जन्म (फाल्गुन) फरवरी माह सन् 1824 में हुआ था जिसका नाम मूलशंकर रखा गया। तत्पश्चात् समस्त विश्व में इन्हें स्वामी दयानन्द के नाम से जाना गया। जिसने इस समाज को जीना सिखाया, उस समाज को जो चुनौतियों के सामने समर्पण किये बैठा था और धार्मिक और राजनैतिक दासता स्वीकार किये बैठा था। छोटी-बड़ी जाति का भेद जोकि सैकड़ों साल की गुलामी का कारण थी। उसे लोग सीने से चिपकाये बैठे थे। उस समय दया के धनी देव दयानन्द जी महाराज ने जनसमूह को सच्चाई से अवगत कराया कि छुआछूत की भावना या व्यवहार एक अपराध है जोकि वेदों के सिद्धांत के विपरीत है। धर्म और जाति पर आधारित बहुत-सी बुराइयों तथा अंधविश्वास पर चोट करते हुए स्वामी जी ने कुप्रथाओं, विसंगतियों के रखवाले पाखंडियों को ललकारा। उन्हें बताया कि जो अपने कार्य व व्यवहार से ब्राह्मण तुल्य व्यवहार करता है वही श्रेष्ठ है न कि कोई जन्म जाति के आधार पर।

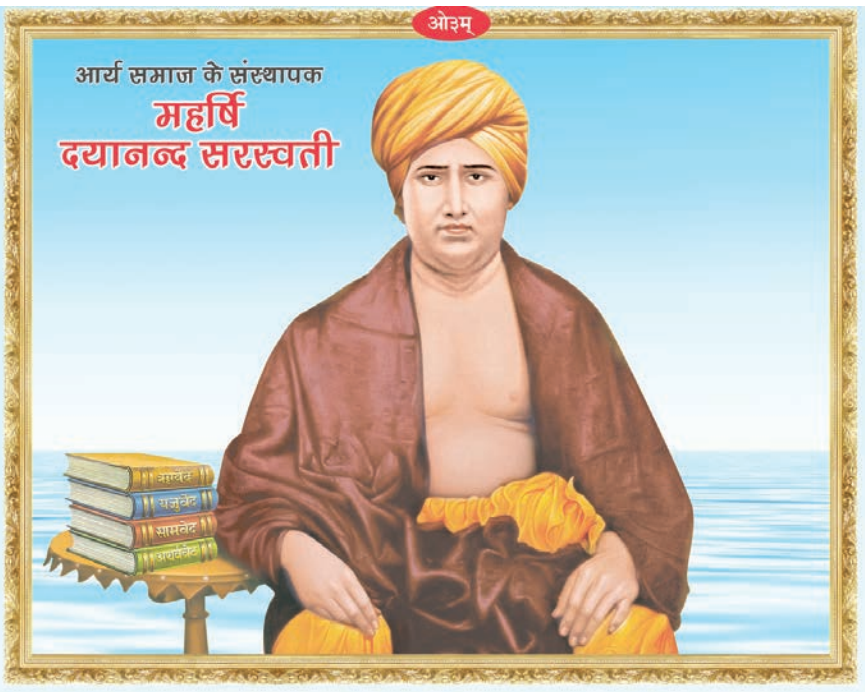

प्रार्थना के साथ-साथ प्रयास करना भी जरूरी है यह सिखाया। स्वामी जी की इस ललकार से समाज की चेतना हिली। स्वामी जी ने धार्मिक सुधार के साथ राजनैतिक सुधार की बात कर अंग्रेजों के सिंहासन तक को हिला डाला। जब अंग्रेज महारानी भारतीयों को यह कहकर दासता का घूंट पिला रही थी कि हम भारतीयों का अपने बच्चों की तरह ख्याल रखेंगे तब स्वामी जी ने कहा था राजा स्वदेश की मिट्टी से पैदा होना चाहिए जिनकी जड़ें अपनी देश की मिट्टी में हों जो विदेश से आयातित न हो जिनकी आस्था अपनी धर्म संस्कृति, सभ्यताओं, परम्पराओं में हो। बाद में स्वामी जी के इन्हीं वाक्यों ने अंग्रेजी सत्ता की नींव हिला दी थी। स्वामी दयानंद सरस्वती जी सर्वदा सत्य के लिए जूझते रहे, सत्याग्रह करते रहे। उन्होंने अपने उद्देश्य-प्राप्ति के लिए

- शेष पृष्ठ 5 पर

....जब अंग्रेज महारानी भारतीयों को यह कहकर दासता का घूंट पिला रही थी कि हम भारतीयों का अपने बच्चों की तरह ख्याल रखेंगे तब स्वामी जी ने कहा था राजा स्वदेश की मिट्टी से पैदा होना चाहिए जिनकी जड़ें अपनी देश की मिट्टी में हों जो विदेश से आयातित न हो जिनकी आस्था अपनी धर्म संस्कृति, सभ्यताओं, परम्पराओं में हो। बाद में स्वामी जी के इन्हीं वाक्यों ने अंग्रेजी सत्ता की नींव हिला दी थी। स्वामी दयानंद सरस्वती जी सर्वदा सत्य के लिए जूझते रहे, सत्याग्रह करते रहे। उन्होंने अपने उद्देश्य-प्राप्ति के लिए कभी हेय और अवांछनीय साधन नहीं अपनाए। स्वामीजी ने आने वाली पीढ़ी के सोचने के लिए देश, जाति और समाज के सुधार, उत्थान और संगठन के लिए आवश्यक एक भी बात या पक्ष अछूता नहीं छोड़ा।....

महर्षि दयानन्द वचनामृत

विश्व के इतिहास में धर्म, राजनीति और समाज सेवा इन तीनों क्षेत्र में अपनी भूमिका निर्वाह करने वाले दुर्लभ महापुरुषों की श्रेणी में महर्षि दयानन्द अग्रगण्य हैं। जिन्होंने वेदोक्त धर्म की सच्ची व निभ्रान्त व्याख्या की। अनेक सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। साथ ही स्वदेशी राज की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए स्वतंत्रता का शंखनाद करके विश्व का महान उपकार किया। विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, आदित्य ब्रह्मचारी, महान योगी, सन्तहृदय, दया, करुणा, परोपकार, सरलता, सहिष्णुता के धनी महर्षि दयानन्द महाराज के अनमोल वचनों को पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत करते हैं-

1. जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान होता है।
2. जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। आज भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।
3. जैसे शीत से आतुर पुरुष अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर का सामीप्य प्राप्त होने से सब दोष दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।
4. जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तब तक राष्ट्र बढ़ता रहता है। जब दुराचारी हो जाते हैं, तब राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।
5. जिससे दु:ख सागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उन्हीं को तीर्थ समझता हूं, इतर जलस्थलादि को नहीं।
6. 'मुक्ति के साधन' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।
7. परमात्मा की इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता।
8. कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।
9. परोपकार और परहित करते समय अपना मान अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।
10. जो मनुष्य जगत का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।
11. जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ में भी ब्रह्मचारी के सदृश है।
12. सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।
13. जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश पर हानि मात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।
14. वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना अन्य किसी से नहीं।
15. जो कोई सभा में अन्याय होते हुए देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले, वह महापापी होता है।
16. एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति, तद्धीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।
17. जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वह प्रशंसनीय है।
18. मनुष्य उसी को कहना जोकि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा (यदि) निर्बल हो तो उससे भी डरता रहे।
19. मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता है।
20. मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए।

-चन्द्रशेखर शास्त्री, नई दिल्ली

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न

लगभग 30 विद्यालयों के 10 हजार से अधिक बच्चों ने दी परीक्षा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में 31 जनवरी को नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 30 आर्य विद्यालयों के 10 हजार से अधिक बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। यह परीक्षा सभी विद्यालयों में कक्षा एक से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई जो एक ही समय पर प्रारम्भ हुई। परीक्षा की विशेषता यह रही कि सभी बच्चे बड़े शांत भाव से अपनी-अपनी परीक्षा में निमग्न थे। आर्य विद्या परिषद् का इस परीक्षा को आयोजित करने का उद्देश्य बच्चों को संस्कारित करना है क्योंकि आज जो शिक्षा बच्चों को दी जा रही है, वह बच्चों को व्यावसायिकता की ओर तो उन्मुक्त करती है लेकिन वे संस्कारों से वंचित रह जाते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आर्य विद्या परिषद प्रतिवर्ष नैतिक शिक्षा परीक्षा को आयोजित करती है। दिल्ली के बाहर के विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागू है वहां भी इस मास के अन्त तक परीक्षा आयोजित करने का प्रयास किया जाएगा। सभी आर्य विद्यालयों से निवेदन है कि अपने यहां परीक्षा आयोजित करने के लिए नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागू करें।

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के तत्त्वावधान में भारत एकात्मता यात्रा कार्यक्रम सम्पन्न

पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र में भारत एकात्मता यात्रा का आयोजन आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में किया गया। यात्रा के पूर्व यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं विशिष्ट अतिथि प्रांतीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण एवं भारतीय एकात्मता यात्रा का शुभारम्भ ओ३म् ध्वज दिखाकर किया। इस शोभायात्रा में लगभग 38 झांकियां प्रस्तुत की गईं। जिसमें घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की थीम पर आधारित झांकी में लाईव यज्ञ होता रहा। देश भक्ति पर वतन के रखवाले नाम से एक झांकी प्रस्तुत की गई जिसमें सैनिकों की शौर्यगाथा का वर्णन दिखाया गया। आर्य समाज बाहरी रिंग रोड की झांकी महर्षि दयानन्द के क्रांतिकारी शिष्य के शीर्षक से श्याम जी कृष्ण वर्मा, क्रांतिकारी सुखदेव, भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद व पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की शौर्यगाथा को प्रदर्शित किया गया। आर्यवीर दल की शाखा, गुरुदत्त विद्यार्थी, आर्य समाज बाहरी रिंग रोड का विशेष सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त हुई। यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने सभी झांकियों का अवलोकन किया एवं प्रबन्ध समिति को इसके लिए बधाई दी।

-वेद प्रकाश, प्रधान

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द जी धार्मिक व.....

कभी हेय और अवांछनीय साधन नहीं अपनाए। स्वामीजी ने आने वाली पीढ़ी के सोचने के लिए देश, जाति और समाज के सुधार, उत्थान और संगठन के लिए आवश्यक एक भी बात या पक्ष अछूता नहीं छोड़ा। इसी समय देश में पुनर्जागरण हुआ। देश ने अंगड़ाई ली जो सैंकड़ों सालों से युवा जात-पात के लिए आपस में लड़ रहे थे। उन्हें समझाया कब तक दूसरों के लिए लड़ोगे! कभी इस राजा के लिए कभी उस राजा के लिए, कभी अपनी जाति के लिए तो कभी आडम्बरों की रक्षा के लिए? उठो जागो! अब राष्ट्र की एकता धर्म के सिद्धांत के लिए, राष्ट्र निर्माण के लिए सीना तानकर खड़े हो जाओ। इस कारण आधुनिक भारत के निर्माण को प्रोत्साहन मिला। अँग्रेजी सरकार स्वामी दयानंद से बुरी तरह तिलमिला गयी। स्वामीजी से छुटकारा पाने के लिए, उन्हें समाप्त करने के लिए तरह-तरह के षड्यन्त्र रचे जाने लगे जिसमें पाखंडियों का सहयोग भी नहीं नकारा जा सकता जो इस भारत को धर्म के नाम पर लूट रहे थे। धर्म सुधार हेतु अग्रणी रहे दयानंद सरस्वती ने अप्रैल1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। वेदों का प्रचार करने के लिए उन्होंने पूरे देश का दौरा करके पंडित और विद्वानों को वेदों की महत्ता के बारे में समझाया। स्वामी जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुन: हिन्दू बनने की प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया। पुन: वैदिक कॉलेजों की स्थापना होने लगी। हिन्दू समाज को इससे नई चेतना मिली और अनेक संस्कारगत कुरीतियों से छुटकारा मिलना आरम्भ हो गया। स्वामी जी ने एकेश्वरवाद का रास्ता दिखाया। उन्होंने जातिवाद और बाल-विवाह का विरोध किया और नारी शिक्षा तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। उनका कहना था कि किसी भी अहिन्दू को हिन्दू धर्म में लिया जा सकता है जिस कारण उस समय हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन रुक गया। उन्होंने इस सर्व समाज को सत्यार्थ प्रकाश जैसा सही रास्ता दिखाने वाला ग्रन्थ दिया। अपनी युवावस्था, अपना जीवन, अपना सर्वस्व इस देश और समाज को दिया। क्या स्वामी जी का यह बलिदान कोई भूल सकता है। वे प्रत्येक की पूर्ति के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा मरण-पर्यन्त प्रयत्नशील रहे उन्होंने अपने उपदेशों, लेखों द्वारा और लोगों के सम्मुख अपना पावन आदर्श तथा श्रेष्ठ चरित्र उपस्थित करके देश में जागृति उत्पन्न कर दी जिससे भावी राजनैतिक नेताओं का कार्य बहुत ही सुगम व सरल हो गया। नि:संदेह स्वामी दयानंद सरस्वती राष्ट्र-निर्माता थे।

- राजीव चौधरी

Continue from last issue :-

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Self-dependence

Self dependence is the prevailing tone of the Vedas. The Yajurveda gives the sermon, "O man, may you yourself perform the work with devotion and may you yourself enjoy. Your grandeur cannot be achieved by anyone other than you. Equip yourself with sound body and resolute mind to seek the strength of your soul."

Strengthen the organs of the body with balanced diet, regulated sleep, exercise and good habits. Keep them strong as rock, free of disease. Let your two eyes, two ears, two nostrils, two arms, head, chest, stomach, two feet, mouth and sex organs beautifully grow and develop. Never think soundly that you will be benefitted if someone else worships and meditates on your behalf. Remember, as you sow, so you reap. If 'A' takes food, how is it possible that 'B's body shall be nourished. It is only the idle that depends upon others for their sustenance. The sweet joy you would acquire if you work hard yourself will never be obtained if someone works for you. You cannot be strong with the support of someone else. You cannot be wise by somebody's intellegence. You alone will save your own self. You are your own real friend and you are also your own foe. You are the maker of your destiny. Remember, those who depend upon others are not at all dear to the Lord.

स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे ।। (Yv. XXIII.15)

Svayam vaginstanvam kalpayasva svayam yajasva svayam jusasva.
mahima te' nyena na sannase.

Svaha

Svaha is the soul of sacrifice. That is the last and essential part of the incantation done in each oblation. Svaha is self sacrifice (sva+aha). To do good to others at the cost of one's comfort is Svaha. When the sacrificer, the performer of Yajna, takes view of the vast sky, he feels the 'Ahuti', oblation of all bounties of Nature offering life energy to the living beings. Sun, moon, clouds, wind chant the spirit of Ahuti or surrender for welfare of others. The sun burns ifself to serve all the creatures. Light from the sky, food from the earth are gifts of oblation offered for living beings. The Universe exists due to sacrifiee and generositing mature the heart of a devout sacrificer throbs with joy:

"As the monsoon collecting the vapour of the ocean showers Ahuti in the form of rains in far off places, likewise I will spread out and utilize my physical and mental strength for the welfare of humanity. In the parched heart of the earth, I will shower divine rains of peace."

स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात् स्वाहा।
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा वातादारभे स्वाहा। (Yv.IV.6)

Svaha yajnam manasah svahororantariksat svaha.
dyavaprthivibhyam svaha vatadarabhe svaha..

The World Citizen

The verse felicitates a world citizen who is free from prejudices and rich in experience : "O, the fortunate man, travel across the world to protect the human values and upgrade the down-trodden. May your long journey be without any hindrance. Proceed forward fearlessly. Always remember that the resplendent heaven is protecting you. Travel with joy inspired by the blessings of the illumined sphere. The entire earth is your house. All the living beings are your kith and kin. Expand your soul like the sky. May your life of dedication be deep like the fathomless ocean".

"Your journey is for relieving the burden of the suffering world. You will meet many terrible enemies who will obstruct your path. Temptations will allure you, But try to be cool and undisturbed when you face such attractions of pleasure. Consider any enjoyment as illness. Remember, you are committed only to carry out the sacred duties of the world citizen. A ceaseless conflict ever goes on in the heart of every one between the play of passion and self control. But strong determination alone can overcome the same and will help to crown you with victory."

द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सधस्थमात्मन्तरिक्षँ समुद्रो योनिः। विख्याय चक्षुषा त्वमभि तिष्ठ पृतन्यतः।। (Yv.XI.20)

Dyauste prstham prthivi sadhasth amatmantariksam samudo yonih.
vikhyaya caksusa tvamabhi tistha prtanyatah..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 20

गतांक से आगे....

आह्वयति = बुलाता है/बुलाती है
सः आह्वयति = वह बुलाता है
सा आह्वयति = वह बुलाती है।
एषः आह्वयति = यह बुलाता है।
एषा आह्वयति = यह बुलाती है
कः आह्वयति ? = कौन बुलाता है ?
पिता आह्वयति।
पिता कम् आह्वयति ?
पिता किसको बुलाता है ?
पिता पुत्रम् आह्वयति।
पिता पुत्र को बुलाता है।
का आह्वयति ? = कौन बुलाती है ?
माता आह्वयति = माँ बुलाती है।
माता काम् आह्वयति ?
माँ किसको बुलाती है ?
माता पुत्रीम् आह्वयति।
माँ पुत्री को बुलाती है।
मम अङ्गणे एकं दर्दुरं पश्यामि
मेरे आँगन में एक मेढक को देखता हूँ।
सः इतस्ततः कूर्दति
वह यहाँ-वहाँ कूदता रहता है।
अधुना वर्षा अवश्यमेव भविष्यति
अब वर्षा अवश्य होगी।
चटकाः मृत्तिकायां स्नानं कुर्वन्ति
चिड़ियाएँ मिट्टी में नहाती हैं।
अधुना वर्षा अवश्यमेव भविष्यति
अब वर्षा अवश्य ही होगी।
टिट्टिभः चन्चुना मृत्तिकां खनत्ति
टिटिहरी चोंच से मिट्टी खोदती है।
ऊष्णता बहु अधिका अस्ति
गर्मी बहुत अधिक है।
वायुः अपि न प्रवहति
हवा भी नहीं चल रही है।
तेजसः दशम्यां कक्ष्यायाम् आसीत्।
तेजस दसवीं कक्षा में था।
अधुनैव तस्य परीक्षा संपन्ना जाता।
अभी ही उसकी परीक्षा पूरी हुई।
तस्य परिणामः ज्येष्ठ मासे आगमिष्यति।
उसका परिणाम जेठ महीने में आएगा।
अधुना तस्य अवकाशः अस्ति।
अभी उसकी छुट्टियाँ हैं।
अवकाश-दिनेषु तस्य माता वैदिकंज्ञानं ददाति।
छुट्टियों के दिनों में उसकी माँ वैदिक ज्ञान देती है।
माता संध्यापाठं शिक्षयति।
माँ संध्या पाठ सिखाती है।
माता यज्ञमन्त्रान् पाठयति।
माँ यज्ञ मन्त्र पढ़ाती है।
माता ध्यानस्य अभ्यासं कारयति।
माँ ध्यान का अभ्यास कराती है।

संस्कृत वाक्य अभ्यासः

ग्रीष्मावकाशे माता भारतीय-संस्कृत्याः ज्ञानं ददाति।
ग्रीष्मावकाश में माँ भारतीय संस्कृति का ज्ञान देती है।
महिलाः किं किं कुर्वन्ति ?
महिलाएँ क्या-क्या करती हैं ?
महिलाः बालकान् पालयन्ति।
महिलाएँ बच्चों को पालती हैं।
महिलाः बलकान् पाठयन्ति।
महिलाएँ बच्चों को पढ़ाती हैं।
महिलाः बालकान् प्रेरयन्ति।
महिलाएँ बच्चों को प्रेरित करती हैं।
महिलाः गृहकार्यम् अपि कुर्वन्ति।
महिलाएँ घर का काम भी करती हैं।
महिलाः श्रमम् अपि कुर्वन्ति।
महिलाएँ श्रम भी करती हैं।
महिलाः पुस्तकानि लिखन्ति।
महिलाएँ पुस्तकें लिखती हैं।
महिलाः विमानम् अपि चालयन्ति।
महिलाएँ विमान भी चलाती हैं।
सेनायाम् अपि महिलाः सन्ति।
सेना में भी महिलाएँ हैं।
अनेकाः महिलाः चिकित्सिकाः अपि सन्ति।
बहुत सी महिलाएँ चिकित्सिका भी हैं।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

युग नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती

युगनायक ऋषि दयानन्द की, शिक्षाओं को मानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान धुरन्धर, देश भक्त मतवाले।।

बाल ब्रह्मचारी, तपधारी, संत अजब थे त्यागी।
शीलवन्त गुणवान दयामय, थे अद्भुत वैरागी।।
जीव मात्र के हित चिंतक को, ठीक तरह तुम जानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।। 1 ।।

वेद ज्ञान को भूल गई थी, बिल्कुल दुनियाँ सारी।
अंधकार में भटक रहे थे, दुनियां के नर-नारी।।
चेतन की पूजा तज दी थी, जड़ पूजा भी जारी।
लाखों गऊएं रोजाना, जग में जाती थी मारी।।

पढ़ो सभी इतिहास पुराना, गलत ठान मत ठानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
देव पुरुष ने कृपा की थी, सारे जग पर भारी।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, समझाएं नर-नारी।।

दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, बनकर परोपकारी।
छुआछूत की, ऊँच-नीच की दूर करो बीमारी।।
ऋषि ने गौ को मात बताया, ऋषि की शिक्षा मानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।

भारत था परतंत्र, जुल्म करते थे गोरे भारी।
उनके जुल्मों से आतंकित, थी तब जनता सारी।।
स्वामी जी ने आजादी का, अनुपम पाठ पढ़ाया।
अंग्रेजों को मार भगाओ वैदिक मार्ग बताया।।

धीर-वीर निर्भीक गुरु की, महानता पहचानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
याद रखो, ऋषि देव दयानन्द अगर न जग में आते।
ऋषियों के वंशज दुनियां में, ढूंढे से न पाते।।

राम कृष्ण के भक्त आर्यजन, दर-दर धक्के खाते।
वेद शास्त्र रामायण, गीता, के पाठक मिट जाते।।
'नन्दलाल' ऋषि दयानन्द के, गुण गाओ मर्दानों।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक, पलवल

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव पर विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज वेद प्रचार मण्डल-उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर विशाल शोभा यात्रा 19 फरवरी 2017 को आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली से प्रात: 11 बजे प्रस्थान करेगी। यात्रा के पूर्व प्रात: 10 बजे यज्ञ सम्पन्न होगा। *-जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद का शताब्दी समारोह

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य नगर, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद (हरियाणा) का भव्य शताब्दी समारोह 18 से 19 फरवरी 2017 को आयोजित किया जा रहा है। समारोह के अन्तर्गत आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा आचार्यगण इस अवसर पर पधारेंगे।

-आचार्य ऋषिपाल, प्राचार्य

निगमनीडम्-वेदगुरुकुलम् का 12वाँ वार्षिकोत्सव

वेदगुरुकुलम् निगमनीडम्, दयानन्द मार्ग, पिडिचेड़, गज्वेल, सिद्धिपेट, तलंगाणा में 26 फरवरी 2017 को 12वाँ वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। मुख्य अतिथि श्री मणिकोण्डा लक्ष्मीकान्ताराव जी व विशिष्ट अतिथि योगाचार्य श्री धर्मवीर जी , श्री शिव कुमार (न्यायवादी, गज्वेल), श्री नागिरेड्डी (सरपंच, पडिचेड) श्री महिपालरेड्डी (बेजुगांव) सम्मानीय अतिथि होंगे। - *उदयनाचार्य*

आर्यसमाज अशोक विहार-1 में साँख्य दर्शन कार्यशाला

आर्य समाज अशोक विहार फेस-1 दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य समाज प्रांगण में स्वामी विवेकानन्द जी रोजड़ के सानिध्य में साँख्य दर्शन पर 23 से 26 मार्च 2017 सायं 6 से 6.20 बजे तक चतुर्दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। संध्या एवं भजन सायं 6.20 से 8.30 बजे तक आयोजित होगी। कृपया अपने आगमन की सूचना मो. 9891610320, 9811122320 पर देने की कृपा करें।

- जीवनलाल आर्य, मन्त्री

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज कुन्हाडी कोटा में 7 दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, संगीतमय रामकथा एवं वेदोपदेश का कार्यक्रम 9 से 15 जनवरी तक सम्पन्न हुए। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिवदत्त पाण्डे गुरुकुल धनपतगंज सुल्तानपुर थे। राम कथा भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त आर्य व उनकी संगीत मण्डली द्वारा सम्पन्न करायी गई। *-पी.सी. मित्तल, प्रधान*

ऋषिबोधोत्सव

धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ, जनकपुरी एवं आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी के संयुक्त तत्त्वावधान में 26 फरवरी को प्रात: 8 से 1 बजे तक ऋषिबोधोत्सव आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी में आयोजित किया जा रहा है।

- वीरेन्द्र सरदाना, प्रधान

पर्यावरण बचाओ रैली का सफल आयोजन

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास पूर्वी दिल्ली विभाग में 5 फरवरी को पर्यावरण बचाओ रैली का आयोजन डीडीए फ्लैट्स मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात शिक्षाविद मा. दीनानाथ बत्रा, प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. सदाचारी तोमर, डॉ. उषा मीणा, दुर्गापुरी क्षेत्र के पार्षद श्री अनिल गौतम, रामनगर वार्ड की पार्षद सुषमा शर्मा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास दिल्ली प्रांत के संयोजक संजय स्वामी तथा शहादरा क्षेत्र के 32 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक उपस्थित हुए। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण संरक्षण पर 'पोस्टर बनाओ' एवं 'स्लोगन लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया था।

मुख्य अतिथि श्री दीनानाथ बत्रा ने कहा कि ''पर्यावरण के संरक्षण के लिए हमें अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की ओर मुड़ना होगा। हम जल का समुचित उपयोग

करे, दुरुपयोग से बचें। प्लास्टिक थरमाकोल का प्रयोग न करें। वृक्ष लगाएं इस धरा को सुंदर बनाएं। पर्यावरण बचाओ रैली के संयोजक संजय स्वामी ने कहा कि हम पर्यावरण को सबका विषय बनाना चाहते हैं। पर्यावरण संरक्षण हम सबकी नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी है। अत: केवल मात्र विद्यालय नहीं समाज की भी सहभागिता हो। - *संदीप उपाध्याय*

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016

प्रधान : श्री प्रेम सागर तलवार
मंत्री : श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री पी. पी. सभ्भरवाल

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2 नई दिल्ली-110048

प्रधान : श्री सहदेव नांगिया
मंत्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री आर. एन. सलूजा

'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' उपाधि से सम्मानित होंगे श्री विजय सिंह भाटी

शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा श्रीमती शारदा देवी की चतुर्थ एवं स्वतंत्रता स्व. श्री छोटू सिंह आर्य की दशम् पुण्यतिथि पर सप्तम् सम्मान समारोह में श्री विजय सिंह भाटी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को 'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' की उपाधि से सम्मानित करने का निर्णय किया है। यह सम्मान 23 फरवरी अपराह्न 3 बजे आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में प्रदान किया जाएगा।

-अशोक आर्य, मुख्य ट्रस्टी

अतीत के झरोखे से

शायद बहुत कम लोग यह बात जानते होंगे कि आर्य समाज की पहली कार्य समिति में एक मुसलमान सज्जन हाजी अल्लाह रक्खा रहमत उल्ला सोनावाल भी थे। बम्बई के काकड़वाड़ी आर्य समाज भवन में दानदाताओं की सूची में सबसे ऊपर उन्हीं का नाम अंकित है। यहां तक कि आर्य समाज की स्थापना भी एक मुसलमान की कोठी पर ही हुई थी। - ***मामचन्द रिवाड़िया,*** *संस्थापक महामंत्री*
आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110007, मो. 09212003162

शोक समाचार

डॉ. जे. पी. गुप्ता का निधन

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल के प्रधान डॉ. जे.पी. गुप्ता जी का दिनांक 31 जनवरी, 2017 को 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ अगले दिन लोदी रोड शमशान घाट पर किया गया। वे अपने पीछे पत्नी व दो सुपुत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 फरवरी को मातामन्दिर न्यू फ्रेंड्स कालोनी में सम्पन्न हुई, जिसमें पारिवारिक जनों के साथ-साथ सभा एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री अरुण अब्रोल जी को मातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री एवं टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अरुण अब्रोल जी की पूज्य माताजी श्रीमती स्वर्णलता अब्रोल जी का दिनांक 24 जनवरी को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार ओशिवारा शमशान घाट पर 25 फरवरी को किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज अंधेरी में 27 जनवरी को सम्पन्न हुई। दिल्ली सभा एवं सार्वदेशिक सभा की ओर से माताजी के निधन पर शोक प्रस्ताव भेजे गए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 फरवरी, 2017 से रविवार 12 फरवरी, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9/10 फरवरी, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 फरवरी 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

वैदिक चिन्तन स्वीकारने ....

यह नजारा हिन्दू आध्यात्मिक सेवा मेला गुरुग्राम हरियाणा में देखने को मिला। जिसमें उत्तर भारत के करीब 400 हिन्दू संगठनों ने भाग लिया। आर्य समाज ने इस मेले में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज की। दो फरवरी से पांच फरवरी तक चलने वाले इस मेले में देश की सांस्कृतिक और आध्यत्मिक छठा देखते ही बन रही थी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज के वैदिक साहित्य का स्टॉल हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। अखण्ड भारत की कल्पना के साथ भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और सेवा कार्यों की झलक दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए हरियाणा में पहली बार इस मेले का आयोजन किया गया।

हरियाणा के गुरुग्राम स्थित सेक्टर -29 लेजर वैली मैदान में पहली बार आयोजित हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा मेले का उद्घाटन आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश ने किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि ''भारतीय हिन्दू अध्यात्मवाद वैदिक संस्कृति पर आधारित है। वेदों में अध्यात्म व भोगवाद पर गंभीर चिंतन किया गया है। यजुर्वेद के 40 वें अध्याय का पहला श्लोक हमें यह बताता है कि संसार के कण-कण में ईश्वर विद्यमान है। वैदिक संस्कृति पर आधारित हमारी भारतीय संस्कृति भोगवाद का विरोध नहीं करती लेकिन मनुष्य को सीख देती है कि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का त्यागपूर्वक भोग करो। इसलिए हमें संसार में उपलब्ध सभी प्राकृतिक संसाधनों का भोग यह समझ कर करना चाहिए की यह दुनिया किसी और की नहीं यानी ईश्वर की है। इसका नाजायज दोहन नहीं किया जाना चाहिए। अगर इस चिंतन को दुनिया आत्मसात कर ले तो आतंकवाद जैसी समस्या के लिए दुनियां में कोई जगह नहीं रहेगी।'' मेले के उद्घाटन के पश्चात् महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने आर्य समाज दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और विचार टीवी के संयुक्त स्टाल संख्या 197-198 का फीता काटकर उद्घाटन किया। दिल्ली सभा की ओर से उन्हें 'ओ३म्' शब्द का प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री एस. के. आर्य ने स्टॉल पर दीप प्रज्ज्वलित किया।

आचार्य जी ने अपने सम्बोधन में आगे इस बात पर भी गहरी चिंता व्यक्त की कि ''आज का चिंतन पश्चिम से प्रभावित है जो ईट ड्रिंक एंड बी मैरी के क्षणिक सिद्धांत पर आधारित है। इसका स्रोत यूरोप रहा है जहाँ केवल वर्तमान जन्म की चिंता की जाती है अगले जन्म की परिकल्पना बिल्कुल नहीं की जाती। इस कारण दुनिया आज समस्याओं से घिरी है क्योंकि यूरोपीय सोच में सहअस्तित्व के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि हमारे वेदों में स्वयं भगवान ने कहा है कि यह दुनिया, पहाड़, नदी, नाले, जीव-जन्तु मैंने दिए हैं। इसे अपना समझ कर भोग मत करो। उन्होंने कहा कि भगवान ने प्रकृति में हर चीज किसी उद्देश्य से दी है।'' राज्यपाल ने अध्यात्म के दो शब्द अस्तेय व अपरिग्रह की व्याख्या कर यूरोप व भारतीय चिंतन को परिभाषित किया।

भारतीय चिंतन कहता है कि यह विश्व आपका नहीं है क्योंकि जब आपका जन्म हुआ तब आप दुनिया लेकर नहीं आये थे और जब मृत्यु होगी तब भी आप दुनिया को साथ लेकर नहीं जायेंगे। उनके शब्दों में इसका मतलब साफ है कि यह सृष्टि परमात्मा की बनाई हुई ही नहीं बल्कि हर वस्तु में परमत्मा व्याप्त है। इसीलिए वेदों में भगवान ने कहा है कि यदि तू मुझे प्राप्त करना चाहता है तो मेरे बनाये सभी प्राणियों से तू प्रेम कर और सबका ख्याल रख। यहां तक कि तू सबमें मुझे ही देख, मेरा ही दर्शन कर। आचार्य देवव्रत ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय चिंतन को यदि विश्व में सभी मानने लग जाएं तो दुनिया में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं रहेगी क्योंकि भारतीय चिंतन वाला व्यक्ति प्राणी मात्र में अपनी आत्मा व परमात्मा को देखता है।

इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन एस के आर्य ने कहा कि इस मेले का आयोजन 6 बिंदुओं-वन एवं वन्य प्राणियों, पर्यावरण, मानवीय मूल्यों, नारी सम्मान, देशप्रेम तथा सांस्कृतिक सुरक्षा को लेकर किया जा रहा है। इन 6 बिंदुओं के माध्यम से हमारी समझ संस्कृति को लोगों विशेषकर युवा पीढ़ी तक पहुंचाना है। इस मेले में सैनिक सम्मान के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित गये, जिसमें देश की सेवा करते हुए परमवीर चक्र पाने वाले जवानों को सम्मानित किया गया। परमवीर वंदन नाम से आयोजित इस कार्यक्रम में रिटायर जनरल जी. डी. बक्सी समेत सैकड़ों पूर्व सैनिकों ने हिस्सा लिया। इस मेले में 51 हजार विद्यार्थियों ने एक साथ वंदे मातरम गीत गाकर आकाश को गुंजायमान किया।

प्रतिष्ठा में,

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह

महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में 23-25 फरवरी 2017 तक ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : 18 से 24 फरवरी 2017 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि एवं श्री सत्यपाल पथिक

अध्यक्षता : श्री पूनम सूरी (प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री)

बोधोत्सव : दिनांक 24 फरवरी 2017

मुख्य अतिथि : श्री विजय रूपाणी (मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार)

वि. अतिथि: श्री एच.आर. गन्धार (प्रशासक डी.ए.वी. वि.वि.)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभा : श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल

(प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- शिवराजवती आर्या, उप प्रधाना रामनाथ सहगल, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह